न्यायदर्शन की शास्त्र प्रवृत्ति - 2

B.A. (H) II Year

Paper - 3, Unit - I

डॉ० विकास सिंह

② लक्षण :- लक्षण को परिभाषित करते हुए न्यायभाष्यकार कहते हैं -

"तत्रोद्दिष्टस्य तत्त्वव्यवच्छेदको धर्मो लक्षणम् ।"[1]

अर्थात् उद्देश किये पदार्थ के तत्त्व का स्वरूपों को भेद की सिद्धि करने वाले धर्म को लक्षण कहते हैं।

न्यायमञ्जरीकार ने लक्षण की परिभाषा इस प्रकार दी है -

"उद्दिष्टस्य तत्त्वव्यवस्थापको धर्मो लक्षणम् ।"[2]

तात्पर्य यह है - कहे गये पदार्थों के तत्त्व का व्यवस्थापक अथवा निर्धारक धर्म लक्षण। धर्म से आशय वैशिष्ट्य या स्वरूप है।

तर्कभाषाकार की परिभाषा सरलतम है -

"लक्षणं तु असाधारणधर्मवचनम् । यथा गोः सास्नादिमत्त्वम् ।"[3]

जो असाधारण धर्म का प्रतिपादन करता है वह लक्षणकथन है। जैसे सास्ना गाय का लक्षण है।

तर्कदीपिकाकार अन्नम्भट्ट ने कहा है -

"लक्ष्यतावच्छेदकसमनीयत्वमसाधारणत्वं लक्षणम् ।"[4]

अर्थात् लक्ष्यता के अवच्छेदक अथवा प्राकृतिक धर्म के समान जो असाधारण धर्म होता है, वह लक्षण है। जैसे - 'सास्नादिमत्वं गोत्वम्' कहने पर गाय के असाधारण धर्म सास्ना का ज्ञान होता है। जहाँ - जहाँ सास्ना होगी वहाँ - वहाँ गाय होगी। अतः सास्ना गाय का लक्षण है।

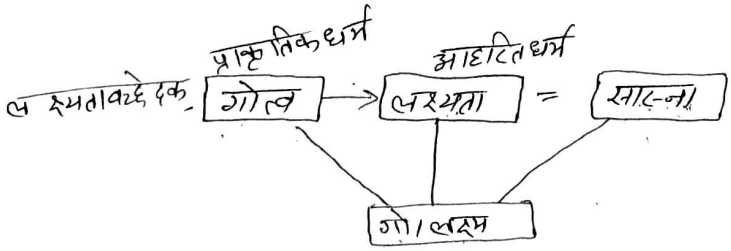

---

1. न्या. भा., पृ० 22
2. न्या. म., पृ० 34
3. त. भा., पृ० - 4
4. त. सं. दी; पृ० -

लक्षण हमेशा तीन दोषों - अतिव्याप्ति, अव्याप्ति व असम्भव से मुक्त होना चाहिए। नव्यन्याय की भाषा में इनके लक्षण निम्न प्रकार से हैं -

(अ) अतिव्याप्ति - "लक्ष्यतावच्छेदकसमानाधिकरणत्वे सति, लक्ष्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगीताकभेद सामानाधिकरण्यम्।"

अर्थात् - जो लक्ष्य में भी रहे, उससे भिन्न में भी रहे, वह अतिव्याप्ति दोष है। जैसे - 'शृंगित्वं गोत्वम्' ऐसा कहने पर सींग वाली गाय तो होती है उसके अलावा भैंस, बकरी आदि के भी सींग होते हैं। अतः अतिव्याप्ति दोष है।

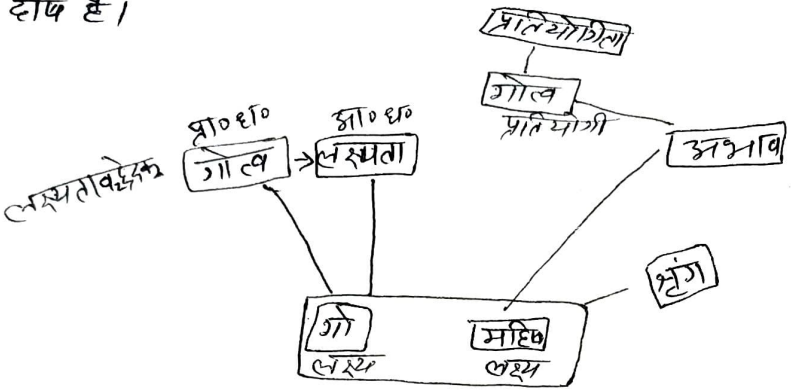

(ब) अव्याप्ति - "लक्ष्यतावच्छेदक समानाधिकरणत्वे सति, लक्ष्यतावच्छेदक-समानाधिकरण अत्यन्ताभाव प्रतियोगीत्वम्।"

अर्थात् जो लक्ष्य के केवल एक भाग में रहें, शेष में न रहे, उसे अव्याप्ति दोष कहते हैं। यथा - "गोत्वं कपिलात्वम्" यदि ऐसा माना जाये तो केवल कपिला वर्ण की गो, गो मानी जायेगी, श्यामा, श्वेतादि नहीं। अतः अव्याप्ति है

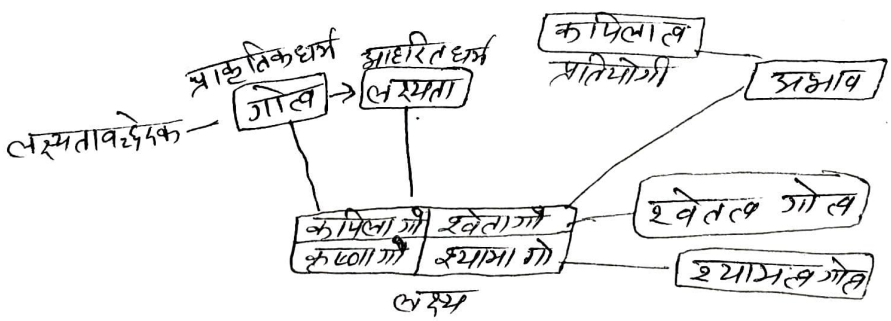

(स) असम्भव - 'लक्ष्यतावच्छेदक व्यापकी भूताभाव प्रतियोगीत्वम्।"

अर्थात् जो लक्ष्य में बिलकुल न रहे, उसे असम्भव कहते हैं। यथा - 'एकशफत्वं गोत्वम्' कहने पर किसी गाय के एक खुर नहीं होता है, अतः असम्भव दोष है।